प्रकाशन तिथि : 01 नवम्बर, 2021
प्रेषण तिथि : 04 नवम्बर, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 16 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

(आकोड़ा, आलोक आश्रम, वाघासण, गोयला, दूदू, नाथद्वारा, निहालपुरा, रत्नावाड़ा, गोठड़ा में शिविर सम्पन्न)

'सृष्टि की अद्भुत घटना है श्री क्षत्रिय युवक संघ का अभ्युदय': संघ प्रमुखश्री

आकोड़ा

विदाई जमाने की परंपरा है। जो आता है उसे एक दिन जाना पड़ता है। प्रत्येक रात्रि के बाद एक नया दिन होता है और उस दिन के बाद पुनः रात्रि आती है, यह सृष्टि की परंपरा है। हम भी इसी सृष्टि के अंग हैं। पिछले सात दिन से हम एक दिव्य अमृतमय वातावरण में रह रहे थे जिसमें विष का कोई अस्तित्व नहीं था लेकिन आज हम पुनः उस संसार में जा रहे हैं जहां चारों ओर विष फैला हुआ है। संघ आपको सावधान कर रहा है कि इन सात दिनों में आपके अंदर जो क्षात्र धर्म का बीज अंकुरित हुआ है उस अंकुरण की जंगली जानवरों से, धूप से, आंधी और तूफान से रक्षा करने की जिम्मेदारी आपकी है। सृष्टि में बहुत कम अवसर ऐसे होते हैं जब अद्भुत घटनाएं घटती हैं और उन्हीं अद्भुत घटनाओं में से एक है श्री क्षत्रिय युवक संघ का अभ्युदय। हम अपने आप को भाग्यवान माने कि हमें संघ की विचारधारा को घर-घर तक पहुंचाने का स्वर्णिम अवसर मिला है। इस अवसर का लाभ उठाने में ही हमारी परीक्षा है। पूज्य तनसिंह जी की पीड़ा को, उनकी फरियाद को घर-घर में सुना देने की जिम्मेदारी हम सब की है। आपने इस प्रांगण में जो कुछ प्राप्त किया है उसे भूले नहीं उसको प्रसारित करें। आप जहां रहते हैं वहां शाखा लगाएं और पूज्य तनसिंह जी के संदेश को सभी तक पहुंचाने में सहयोगी बनें। अपने संकल्प को महान बना कर इस सेवा के यज्ञ में अनवरत आते रहें और जीवन के गीत गाते हुए समाज की सेवा करते रहें यही श्री क्षत्रिय युवक संघ की आपको भोलावण है। उपरोक्त बातें माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास ने बाड़मेर संभाग में चौहटन प्रान्त के आकोड़ा गांव में आयोजित सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में अपने विदाई उद्बोधन में कही। 13 से 19 अक्टूबर तक संपन्न शिविर में क्षेत्र के लगभग 180 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

श्रद्धापूर्वक मनाई पूज्य आयुवान सिंह जी की 101वीं जयन्ती

संघशक्ति

श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघप्रमुख पूज्य आयुवान सिंह जी हुडील की 101वीं जयंती 17 अक्टूबर को विभिन्न स्थानों पर स्वयंसेवकों व समाज बंधुओं द्वारा श्रद्धापूर्वक मनाई गई। बाड़मेर संभाग में चौहटन प्रान्त के आकोड़ा गांव में चल रहे सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में पूज्य श्री की जयन्ती संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर व माननीय संघप्रमुख लक्ष्मण सिंह जी बैण्यांकाबास के सान्निध्य में मनाई गई। केंद्रीय कार्यकारी कृष्णसिंह राणीगांव व संभागप्रमुख महिपाल सिंह चूली सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। संघशक्ति, जयपुर में साप्ताहिक रविवारीय शाखा में माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के सान्निध्य में पूज्य आयुवान सिंह जी को स्मरण किया गया व पुष्पांजलि अर्पित की गई। जालोर संभाग के विभिन्न प्रान्तों में आयुवान सिंह जी की जयन्ती मनाई गई। पाली प्रान्त में वन्दे मातरम एकेडमी (पाली शहर) में वयोवृद्ध स्वयंसेवक नारायणसिंह जी माणकलाव व केंद्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के सानिध्य में जयंती मनाई गई। जालोर प्रांत में काम्बा तथा नागणेशी माता मन्दिर पाँचोटा में, सांचौर प्रान्त में विनायक मन्दिर, करड़ा व सिरोही प्रान्त में खन्दरा व होटल अतिथि इन (सिरोही शहर) में जयन्ती मनाई गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

महारावल दूदा व वीरवर तिलोकसी का बलिदान दिवस समारोहपूर्वक मनाया

श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती कार्यक्रमों की श्रृंखला में जैसलमेर संभाग के रासला में स्थित देगराय मंदिर परिसर में जैसलमेर के दूसरे शाके के नायक महारावल दूदा व वीरवर तिलोकसी का बलिदान दिवस 15 अक्टूबर को समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महारावल दुर्जनशाल (दूदा) व वीरवर तिलोकसी जैसलमेर ही नहीं बल्कि राष्ट्र के गौरव है अतः पाठ्यक्रम में इन राष्ट्रीय नायकों को स्थान मिलना चाहिए। यदि ऐसे महापुरुषों को हम आदर्श मानते हैं तो उनके गुणों को अपने जीवन में उतारने के लिए हमें प्रयत्नशील होना पड़ेगा। हमें अपने महान पूर्वजों की भांति चरित्रवान बनना पड़ेगा। इसके लिये आत्मचिंतन ही एकमात्र मार्ग है। जो परंपराएं वर्तमान परिदृश्य में सही नहीं हैं उनका हमें परित्याग करना चाहिए तथा जो परंपराएं हमें अपनी संस्कृति की जड़ों से जोड़ कर रखती हैं उसका अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम ईश्वर के विधान को समझ नहीं पाते। जो हो रहा है उसी की कृपा से हो रहा है। हम समझते हैं कि यह हमारा है परंतु यह हमारा भ्रम ही है। जो कुछ भी है वह सभी कुछ ईश्वर का ही है। यहां कुछ भी स्थायी नहीं है, सभी कुछ अस्थायी ही है। हम सुख की खोज के लिए कार्य करते हैं, सुख के लिए राजनीति करते हैं, नौकरी करते हैं, धन कमाते हैं परंतु उनमें

वास्तविक सुख नहीं है, केवल सुख की भ्रांति ही बनी रहती है। सुख न धन में हैं न परिवार में है, सुख केवल ईश्वर में ही है। मैं चारों ओर दुःखी लोगो को देखता हूं, वे नई नई समस्याओं से जूझते हैं, परंतु कोई समाधान नहीं पाते हैं क्योंकि उनकी खोज बाहर की ओर है। सुख को खोजना है तो हमें अपने भीतर झांकना होगा क्योंकि सुख का स्रोत हमारे अंदर विराजित है। अपनी आंतरिक भावना को जगाने पर ही हमें वास्तविक सुख का अनुभव होगा। बाहर केवल भटकाव है, प्रेम भीतर है, समाधान भीतर है परंतु हम संसार में उलझ करके यह समझते हैं कि समस्या का समाधान कुछ पाने से होगा। यही दुःख का कारण है। यदि सुखी होना है तो इच्छाओं को छोड़ना होगा और अपने स्वधर्म का पालन करना होगा।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'सृष्टि की अद्भुत घटना है श्री क्षत्रिय युवक संघ का अभ्युदय': संघ प्रमुखश्री

(पृष्ठ एक से शेष)

शिविर के दौरान पूज्य आयुवान सिंह जी की जयन्ती भी माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के सान्निध्य में मनाई गई। इसके अतिरिक्त भी अनेक स्थानों पर प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए। बाड़मेर व वाघासण में दो बालिका शिविर भी आयोजित हुए। बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में बालिकाओं का तीन दिवसीय शिविर 17 से 19 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ। शिविर में उन स्वयंसेविकाओं को प्रशिक्षण दिया गया जिन्हें शिविर संचालन की जिम्मेदारी दी जानी है। माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के सानिध्य एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक दीप सिंह बैण्यांकाबास व जोरावर सिंह भादला के निर्देशन में जागृति बा हरदासकाबास ने शिविर का संचालन करते हुए उपस्थित स्वयंसेविकाओं से कहा कि आप सब पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के संदेश को आगे पहुंचाने की जिम्मेदारी है इसके लिए आवश्यक है कि आपका जीवन पूरी तरह से संघ के अनुरूप हो। प्रशिक्षण देने से पूर्व स्वयं प्रशिक्षित होना आवश्यक है इसीलिए संभावित प्रशिक्षिकाओं का यह शिविर आयोजित किया गया है। अपने उत्तरदायित्व को समझकर इसके लिए स्वयं को तैयार करने की साधना में जुट जाएं। गुजरात में बनासकांठा प्रान्त के वाघासण में 15 से 17 अक्टूबर तक बालिका शिविर का आयोजन हुआ जिसका संचालन जागृति बा हरदासकाबास ने किया। उन्होंने उपस्थित बालिकाओं को संस्कारों का महत्व बताते हुए कहा कि संस्कारों के अनुसार ही व्यक्ति के जीवन का निर्माण होता है और व्यक्ति के निर्माण से ही समाज और राष्ट्र का भी निर्माण होता है। शिविर में वलादर, सवराखा, करबूण, पीलूड़ा, वाघासण, चारडा, डेल, पालड़ी, खानपुर आदि गांवों से लगभग 80 बालिकाओं ने प्रशिक्षण

निहालपुरा

वाघासण

प्राप्त किया। शिविर के दौरान विजयादशमी व आयुवान सिंह जी की जयन्ती भी मनाई गई। प्रवीण सिंह व करण सिंह वाघासण ने व्यवस्था में सहयोग किया। अजमेर प्रांत के सरवाड़ तहसील के गोयला गांव में भी 17 से 20 अक्टूबर तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने शिविर का संचालन करते हुए कहा कि हमने जिस कौम में जन्म लिया है उस कौम की एक लंबी बलिदानी परंपरा रही है। हमारे पूर्वजों ने इस समाज, राष्ट्र और धर्म के लिए अचिंत्य बलिदान करके इस परंपरा को जीवित रखा। आज भौतिकवाद की दौड़ में फंस कर हम उस परंपरा को भूल चुके हैं और अपने स्वधर्म से विमुख हो चुके हैं। संघ हमें पुनः अपने स्वधर्म की याद दिला कर उस परंपरा के पालन के लिए तैयार कर रहा है। शिविर में अरवड़, गोयला, खीरियां, देवरिया, बिलिया, डबरेला, देवगांव, डोराई, जालिया, ढिगारिया, जोतायां, तेलाड़ा, सोल, केकड़ी के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विदाई के दिन आयोजित कार्यक्रम में सेवानिवृत कर्नल रघुबीर सिंह गोयला, जसवंत सिंह डोराई, सवाई सिंह अरवड़, सुरजभान सिंह खिरिया, केशर सिंह ढिगारिया, भगवत सिंह गोयला आदि समाजबंधु सम्मिलित हुए। जयपुर संभाग में श्री बंधे के बालाजी (दूदू) स्थित राजपूत धर्मशाला में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 17 से 20 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन राम सिंह आकदड़ा ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि अनुशासन और एकाग्रता से हम कोई भी कार्य करें तो उसमें सफलता अवश्य मिलती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्वयंसेवक प्रत्येक कार्य अनुशासित ढंग से करता है। वह अपने लक्ष्य के प्रति पूर्ण रूप से एकाग्र होता है। हमने यहां पर चार दिन तक इन गुणों का जो अभ्यास किया है उसे निरंतर जारी रखना है तथा इसके लिए बार-बार शिविरों और शाखाओं में आते रहना है। शिविर में ढींढा, रोजड़ी, इटावा, दूदू, हटूपुरा, मोरसर, गड्डा, सोलावता, सामी, चबराना, नेवरी, चौरू, बनेठी, चिरनोटिया व बोबासर से लगभग 70 शिविरार्थी उपस्थित रहे। डूंगरपुर प्रान्त के रत्नावाड़ा गांव स्थित खेमजमाता मंदिर में भी इसी अवधि में चार दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें डूंगरपुर, जैसलमेर, बांसवाड़ा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ से 120 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने शिविर का संचालन करते हुए कहा कि जो भी ज्ञान हमारे आचरण में नहीं उतरता वह भार स्वरूप बन जाता है। इसलिए जो कुछ भी हमने सीखा है उसे निरंतर अभ्यास के द्वारा अपने आचरण का अंग बना लें। तभी हम संघ के आदर्श स्वयंसेवक बनकर समाज में नई ज्योति जगा सकेंगे। नागेन्द्र सिंह कोटड़ा ने ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला। राजसमंद जिले के नाथद्वारा स्थित श्री महाराणा प्रताप छात्रावास में 13 से 16 अक्टूबर तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसका संचालन संभागप्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने किया। शिविर में सेदरां, डाबियों का गुडा, आमेट, काज्यावास, मोड़वा, कलाखेडी, रामा, डगवाडा, उरिया (राजसमन्द) एवं उदयपुर, चित्तौड़गढ, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली आदि जिलों से प्रशिक्षणार्थी पंहुचे। मेवाड़-वागड़ संभागप्रमुख भंवर सिंह बेमला भी सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। शिविर के अंतिम दिवस स्नेह मिलन, शस्त्र एवं शास्त्र पूजन कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें शिविर संचालक ने संगठित होकर समाज रूपी माता की सेवा करने की बात कही। आयोजकों द्वारा निकट भविष्य में बालिका शिविर आयोजित करने का प्रस्ताव भी रखा गया। शेखावाटी प्रांत में झुंझुनू जिले के नवलगढ़ तहसील में गोठड़ा गांव में बाबा बालक नाथ आश्रम में 15 से 18 अक्टूबर तक शिविर का आयोजन हुआ। विक्रम सिंह ढिंगसरी ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि जब तक हम अपने आपको बदलने का आंदोलन प्रारम्भ नहीं करते तब तक समाज की सेवा के सारे प्रयत्न निष्फल रहेंगे। इसीलिए संघ हमें स्वयं को बदलने का अभ्यास करवा रहा है। शिविर में गोठड़ा, खिरोड़, चिराणा, बरसिंहपुरा, करड़, उदावास आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विदाई के दिन स्नेहमिलन रखा गया जिसमें आस पास के गांवों से समाजबंधु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में वीरपाल सिंह गुढ़ा, दीप सिंह गोठड़ा, कल्याण सिंह झाझड, यशवर्द्धन सिंह झेरली व जुगराज सिंह जुलियासर ने अपने विचार रखे। जयपुर संभाग में दौसा प्रांत में निहालपुरा स्थित बाबा रामदेव मंदिर में 14 से 17 अक्टूबर तक चार दिवसीय शिविर मदन सिंह बामणिया के संचालन में संपन्न हुआ। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि संघ अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के माध्यम से व्यष्टि, समष्टि और परमेष्टि तक की यात्रा संपन्न करवाता है। हमने चार दिन तक इस शिविर में रहकर जो पाया है उसे समाज व राष्ट्र के हित में आगे बांटे तभी उसकी सार्थकता होगी। शिविर में लगभग 100 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बाबा रामदेव मंदिर सेवा समिति, निहालपुरा के कार्यकर्ताओं का व्यवस्था में सहयोग रहा।

महारावल... उन्होंने उपस्थित समाजबंधुओं से संघ के शिविरों से जुड़ने व दुर्व्यसनों का त्याग करने आह्वान किया। संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिंझनियाली ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि संघ अपना हीरक जयंती वर्ष मना रहा है। उसी कड़ी में यह आयोजन किया गया है। महारावल दुर्जनशाल और वीरवर तिलोकसी ने जैसलमेर की आन बान और शान के लिए स्वयं का बलिदान कर दिया। सिर कटने पर भी रणक्षेत्र में जूझते हुए शत्रुओं को मौत के घाट उतारते रहे परंतु हमारे स्वाभिमान पर तनिक भी आंच नहीं आने दी। इसीलिए आज उन्हे याद करने के लिए हजारों की संख्या में हम एकत्रित हुए हैं। उनके प्रति हमारी भावनाएं हमारे पूर्वजों के प्रति सम्मान की साक्षी हैं। कमल सिंह भैंसड़ा ने महारावल दुर्जनशाल व तिलोकसी का परिचय देते हुए बताया कि जैसलमेर में मूलराज व रतनसी ने संवत 1371 में पहला शाका किया। उसके बाद बादशाह ने जैसलमेर दुर्ग में थाना बिठा दिया। बदलती परिस्थितियों में दूदा व तिलोकसी आदि वीरों ने दुर्ग पर अधिकार कर लिया। कुछ वर्ष पश्चात फिरोजशाह तुगलक ने जैसलमेर पर आक्रमण कर दिया। महारावल दुर्जनशाल उर्फ दूदा ने उसका मुंहतोड़ जवाब दिया। लगातार हुए संघर्ष के बाद अंतिम युद्ध का निर्णय लिया गया। दुर्ग में जौहर की अग्नि प्रज्वलित हुई व वीरों ने केसरिया कर अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन कर आत्मोत्सर्ग किया। संघ की स्वयंसेविका गायत्री कंवर चांधन ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि संघ हमें श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करता है किन्तु यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि संघ की बात को हम अपने जीवन में कितना ढाल पाते हैं। कार्यक्रम के लिए सभी का आभार व्यक्त करते हुए जैसलमेर के महारावल श्री चैतन्य राज सिंह ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसे महापुरुषों व वीर बलिदानी शूरवीरों की स्मृति में कार्यक्रम आयोजित कर-के नई पीढ़ी को हमारे इतिहास और संस्कृति से परिचित करवा रहा है। संघ का संस्कार निर्माण का कार्य समाज के लिए आवश्यक है। कार्यक्रम में विधायक रूपाराम, पूर्व विधायक सांग सिंह, छोटू सिंह, शैतान सिंह, प्रधान प्रतिनिधि लख सिंह, श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा, कृष्ण सिंह रानीगांव, पूर्व उप जिला प्रमुख उम्मेद सिंह नरावत सहित सभी समाजों के नागरिक हजारों की संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन रतन सिंह बडोड़ा गांव तथा ईश्वर सिंह बेरसियाला ने किया।

एक छात्रवास ऐसा भी

एक ऐसा नाम जिसकी स्मृति मात्र से समाज को गौरव की अनुभूति होती है। एक ऐसा अनूठा बालिका छात्रावास जिसमें शिशु अवस्था से लेकर युवतियों तक को प्रवेश दिलाकर अभिभावकगण अपनी महती जिम्मेदारी से मुक्त होते हैं और उन बलिकाओं के शिक्षण व संस्कार देने का कार्य यहां की प्रबन्धन कार्यकारिणी बखूबी और जिम्मेदारी से कर रही है। क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में पिछले बीस वर्षों से राजस्थान का शिक्षण-शिखर कहे जाने वाला सीकर में स्थित 'श्री दुर्गा महिला विकास संस्थान' के बेनर तले समाज के भामाशाहों के सहयोग से वर्तमान में दो बालिका छात्रावास चल रहे हैं। नवलगढ़ रोड पर चरणसिंह गेट के भीतर करीब दो बीघा जमीन पर बना पुराना छात्रावास जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं की तैयारी हेतु वहां निवास करके सरकारी नौकरियों व निजी व्यवसाय में नियुक्ति हेतु अपने स्तर पर युवतियां तैयारी करती है। इसी बैनर तले 27 बीघा के परिसर में स्थित नाथावतपुरा में 'पद्मिनी छात्रावास' का नाम अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर ख्याति प्राप्त कर चुका है। यहां शिक्षा के साथ दीक्षा का ऐसा समावेश है कि जैसे क्षुधा शान्ति हेतु ग्राह्य भोज्य सामग्री में अमृत का समावेश हो। जिसे ग्रहण करने से क्षुधा शान्ति के साथ अमृत्व की प्राप्ति भी हो जाती है। इसी परिसर में एक विद्यालय भी संचालित हो रहा है। 'मीरा गर्ल्स स्कूल' के नाम से इस विद्यालय में नर्सरी से कक्षा दस तक की छात्राएं प्रवेश पाकर अपना विद्याध्ययन कर रही है। इसी परिसर में पद्मिनी छात्रावास में निवास करने वाली बालिकाओं हेतु गेहूं व सब्जियां तैयार की जाती हैं। जिससे उन्हें पौष्टिक व शुद्ध आहार दिया जा सके। गौशाला व घुड़शाला की भी व्यवस्था है, परन्तु कोविड-19 के चलते पिछले साल से ही यह व्यवस्था बन्द है। भविष्य में समय अनुकूल होने पर पुनः चालू करने का प्रावधान है। प्रातः 5 बजे से शंख ध्वनि के साथ छात्रावास की दिनचर्या शुरू हो जाती है, जो कि रात्रि दस बजे तक नियमानुसार चलती रहती है। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

(श्री प्रताप फाउंडेशन की सीकर में जिला स्तरीय बैठक)

समाज सदा बहने वाला प्रवाह, उसे केन्द्र में रखें- सरवड़ी

व्यक्ति का जीवन सीमित होता है और वह शीघ्र समाप्त हो जाता है जबकि समाज सदा बहने वाला प्रवाह है उसे केन्द्र में रखकर काम करेंगे तो समाज मजबूत होगा और समाज मजबूत होगा तो हम स्वतः ही मजबूत हो जायेंगे। हम संगठित किसी को दबाने, मारने या मिटाने के लिए नहीं हों बल्कि हमारे वैध अधिकारों के लिए व पीड़ित के साथ खड़े होने के लिए संगठित होवें। हमारी संगठित शक्ति का व्यवहार यदि ऐसा होगा तो सब हमारे साथ आयेंगे और लोकतंत्र में हम मजबूत बन जायेंगे। सीकर के निकट नाथावतपुरा में स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान प्रांगण में 24 अक्टूबर को आयोजित श्री प्रताप फाउंडेशन की चिंतन बैठक को संबोधित करते हुए फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि आज राजपूत जाति पर बहुआयामी संकट है, उन सबसे लड़ना पड़ेगा इसलिए विभिन्न विषयों पर काम हो रहा है। राजनीति भी उनमें से एक है, जिसके लिए हम सब यहां चिंतन कर रहे हैं। जो सदा से हमारे साथ रहे हैं, उनको साथ रखें, उनके साथ अच्छा व्यवहार रखें। लोग उनको बहका रहे हैं या बहकाया है उससे उन्हें अपने व्यवहार के बल पर दूर करें। बार बार हम टांग खिंचाई की बात करते हैं, ईर्ष्या की बात करते हैं यह हमारे वर्षों तक गुलाम रहने के कारण पनपा है। इस स्वभाव के विरुद्ध निरंतर प्रयास की आवश्यकता है, हमारे निरंतर साथ बैठने से जो सामाजिक भाव पनपेगा उससे यह ईर्ष्या का भाव दूर होगा। हमारे में समाज की वर्तमान स्थिति के प्रति जो पीड़ा है उसे जागृत रखें, वही हमें सक्रिय रखेगी और वही सक्रियता हमें इस पीड़ा से मुक्त करेगी। बलवान बनने की यही प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया को जारी रखना है। उन्होंने कहा कि राजनीति में शक्ति के साथ चतुराई भी आवश्यक है, इसके अभाव में भी हम मात खा जाते हैं। हम प्रायः कहते हैं कि सबको साथ लेकर चलना चाहिए, सभी संगठनों को एक होना चाहिए यह भी संभव नहीं है क्योंकि ऐसे अनेक प्रयोग पूर्व में किए जा चुके हैं। एक विचार और एक भाव वाले लोग ही एक साथ चल सकते हैं इसलिए हमारे विचारों और भावों की विभिन्नता को मिटाने के ऐसे प्रयास निरंतर जारी रहने चाहिए। उन्होंने कहा कि सामाजिक शक्ति के मजबूत होने पर ही समाज की और समाज के व्यक्तियों की पूछ होती है, व्यक्तिगत रूप से मजबूत बनने से ही यह संभव नहीं है इसलिए सामाजिक शक्ति को मजबूत बनायें। प्रातः 11.15 से प्रारंभ हुई यह बैठक अपराह्न 4.30 तक चली। बैठक में राजस्थान सैनिक कल्याण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक प्रेमसिंह बाजोर ने राजनीति में व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए हमारे हितों को सर्वोपरि रखने की जरुरत बताई। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन के अनेक उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार शेखावाटी में हम राजनीति में मजबूत भागीदारी निभा सकते हैं। बैठक में यशवर्धन सिंह, जितेंद्र सिंह नाथावतपुरा, दीपेंद्र सिंह सांवलोदा, राजेंद्र सिंह करड़, शोभसिंह अनोखू, भंवरसिंह नाथावतपुरा, बिजेन्द्र सिंह सांवलोदा, प्रभुसिंह कारंगा, प्रहलादसिंह सिंगरावट, मुकनसिंह सिंहासन, सुरेंद्र सिंह रुलाणा, हनुमान सिंह तंवर, रामसिंह उमाड़ा, रामसिंह पिपराली, सुरेंद्र सिंह सामी, सुरेंद्र सिंह जाजोद, राजवीर सिंह किरड़ोली आदि ने अपने विचार रखे। बैठक के प्रारंभ में श्री प्रताप फाउंडेशन की कार्ययोजना की विस्तार से जानकारी दी गई। फाउंडेशन के उद्देश्य व उसमें निहित बिंदुओं की विस्तार से जानकारी दी गई एवं वक्ताओं से उन्हीं बिंदुओं पर अपनी बात रखने का आग्रह किया गया। सभी को कार्ययोजना का पत्रक पंजीयन के समय ही दे दिया गया। बैठक में इस प्रकार की बैठकें तहसील स्तर पर भी आयोजित करने के प्रस्ताव आये एवं सभी ने स्वयं के स्तर पर ऐसे प्रयास करने का आश्वासन दिया। अपराह्न भोजन की व्यवस्था बैठक स्थल पर ही की गई।

नवीं शताब्दी के प्रतापी सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार की जयंती मनाई

18 अक्टूबर को नवीं शताब्दी के महान प्रतिहार शासक मिहिरभोज की जयंती विभिन्न स्थानों पर समारोह पूर्वक मनाई गई। प्रतिहार क्षत्रियों से संबंधित लगभग सभी प्राचीन नगरों व क्षेत्रों में उनकी स्मृति में कार्यक्रम आयोजित किये गए। श्री क्षत्रिय युवक संघ की विभिन्न शाखाओं में भी कार्यक्रम आयोजित किये गए। जोधपुर का मंडोर क्षेत्र प्रतिहारों का उद्गम माना जाता है, वहां इंदावाटी क्षेत्र के बेलवा में समारोहपूर्वक कार्यक्रम किया गया वहीं प्रतिहारों की प्राचीन राजधानी भीनमाल में 19 अक्टूबर को कार्यक्रम रखा गया। नोखा छात्रावास में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की नोखा शाखा ने कार्यक्रम आयोजित किया। 19 अक्टूबर को प्रतिहारों की प्राचीन राजधानी भीनमाल में कचहरी रोड विद्यालय प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में संघ के प्रतिनिधि ने प्रतिहारों के प्राचीन इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि श्रीमाल, पुष्पमाल और भीनमाल के रूप में विख्यात प्रसिद्ध नगरी भीनमाल में प्रतिहारों का शासन रहा तथा उसी वंश में आगे जाकर मिहिरभोज जैसे प्रतापी शासक हुए जिनसे प्रेरणा लेकर हमें भी कर्त्तव्य पालन में प्रवृत्त होना चाहिए। उन्होंने स्वधर्म का पालन करते हुए त्याग, संघर्ष, वीरता, शौर्य जैसी विशेषता को अपने आचरण में लाकर क्षत्रिय ने महान मानवीय मूल्यों को संसार में स्थापित किया। उन मूल्यों के रक्षण और संवर्धन का मार्ग और विचार श्री क्षत्रिय युवक संघ दे रहा है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए समय के साथ साधनों को बदला जाना चाहिए लेकिन साध्य सदैव अपरिवर्तनशील रहता है। हमारा साध्य वही होना चाहिए जो हमारे महापुरुषों का रहा है, हमारे पूर्वजों का रहा है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीमती ललिता कंवर

धर्मपत्नी ठा. विशनसिंह

देवड़ा (ठि.कैलाशनगर)

के

पंचायत समिति शिवगंज

प्रधान के बनने पर

हार्दिक बधाई एवं

शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

श्री गुलाबसिंह (पिता), जबरसिंह, सांगसिंह (काकोसा), मूलसिंह, लक्ष्मणसिंह, जोगसिंह, तेजसिंह, नागपालसिंह, सवाईसिंह (भाई), ठा. कल्याण सिंह, परबतसिंह, जुठसिंह, चंदनसिंह, भंवरसिंह, सुखसिंह दुर्गसिंह, खेतसिंह, गेमरसिंह, आसुसिंह, अर्जुनसिंह, माँगसिंह (AEN), चेनसिंह, नारायणसिंह, देवीसिंह, उम्मेदसिंह, नेपालसिंह, ईश्वरसिंह, धूड़सिंह, कृष्णसिंह (कनिष्ठ सहायक), विशनसिंह, लीलमसिंह, जनकसिंह, जोगसिंह (अध्यापक) व समस्त महेचा परिवार ठि. नोसर (बाड़मेर)

संपादकीय

तथ्य, धारणाएं और इतिहास

एक पश्चिमी विचारक प्रो. माइकल फोस्टर का कथन है कि धारणायें या परिकल्पनाएं विज्ञान के लिए नमक हैं लेकिन धारणाएं और परिकल्पनाएं विज्ञान के लिए जहर बन जाती हैं।' यहां धारणाओं के दो पक्ष उजागर किए गये हैं, पहले पक्ष में वह विज्ञान के लिए नमक बनकर उसके स्वाद को बढ़ा देती है और दूसरे पक्ष में वह विज्ञान के लिए जहर बनकर उसका विनाश करती है। ऐसा तब होता है जब धारणाएं पहले बना ली जाती हैं और फिर उन्हें पुष्ट करने के लिए विज्ञान का सहारा लिया जाता है। ऐसे में उन धारणाओं का लक्ष्य किसी सत्य को पुष्ट करना नहीं होता बल्कि धारणाओं को ही सत्य सिद्ध करना होता है और इस भूमिका में वे धारणाएं सत्य के लिए जहर बन जाती हैं। लेकिन यदि धारणाओं का लक्ष्य सत्य की खोज करना हो, सत्य की ओर बढ़ना हो तो वे उस खोज की प्रक्रिया में सहायक हो जाती हैं और उस प्रक्रिया के स्वाद को बढाने के लिए नमक का काम करती है। यह बात केवल विज्ञान पर ही लागू नहीं होती बल्कि सभी क्षेत्रों में लागू होती है। बेईमान लोग अपनी धारणाओं को जनता पर थोपने के लिए तथ्य गढ़ते हैं और फिर उनके सहारे अपने स्वार्थ सिद्ध करते हैं। सामाजिक व्यवस्थाएं और इतिहास इनका प्रिय विषय होता है और उसके आधार पर ये अपनी रोटियां सेकते हैं। समाज की व्यवस्थाओं में अपनी धारणा के अनुकूल बातें ढूंढते हैं और फिर उनके आधार पर अपने स्वार्थ के लिए शोषण का खेल खेलते हैं। यह एक प्रवृत्ति है और यह प्रवृत्ति कालातीत है अर्थात सदा से ही हर काल में इस प्रवृत्ति के लोग होते आये हैं और उनका शोषण का यह गंदा खेल चलता रहा है।

हमारे देश में भी प्रारंभ से ही ऐसे लोग रहे लेकिन अंग्रेजों का तो पूरा शासन ही इस प्रकार की मिथ्या धारणाओं को पुष्ट करने के लिए एक व्यवस्था बनाकर काम करता रहा। उनको अपने आपको श्रेष्ठ बता कर स्वयं को भारत का उद्धारक सिद्ध करना था और इसके लिए भारत को हीन सिद्ध करना आवश्यक था। सर्वप्रथम तो उन्हें यह सिद्ध करना था कि जिस प्रकार वे भारत के मूल निवासी नहीं है वैसे ही यहां के प्राचीन शासक भी यहां के मूल निवासी नहीं थे और इसीलिए उन्होंने यह धारणा बनाई कि आर्य नामक कोई नस्ल होती थी जिसने भारत पर आक्रमण कर भारत के मूल निवासियों को जंगलों में भेज दिया या निम्न वर्गों में बदल दिया और स्वयं शासक बन बैठे जबकि वास्तविकता यह है कि हमारे प्राचीन वांग्मय में आर्य एक संबोधन सूचक शब्द था जो स्वयं से श्रेष्ठ व्यक्ति को संबोधित कर कहा जाता था। लेकिन उन लोगों को इसे एक नस्ल सिद्ध करना था इसलिए उन संबोधनों को आधार बनाकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि आर्य नाम की कोई एक नस्ल थी जिसने भारत पर आक्रमण कर भारत के मूल निवासियों को गुलाम बनाया और साथ ही यह भी सिद्ध कर दिया कि वे स्वयं भी आर्य ही हैं और उनका व भारत के प्राचीन शासकों का उद्गम स्थल एक है। इस प्रकार उन्होंने भारत पर अपने शासन को न्याय संगत बताया। एक स्वार्थ को पूरा करने के लिए उसके अनुकूल धारणा बनाई, फिर उसके अनुकूल तथ्य गढे और फिर उस धारणा को अपने संसाधनों के बल पर सर्व स्वीकृति के स्तर तक पहुंचाया। इसके लिए उन्होंने हमारे प्राचीन ग्रंथों का अपनी सुविधानुसार विवेचन किया और उस विवेचन के बल पर मिथ्या तथ्य गढ़ कर मिथ्या धारणाओं को सत्य सिद्ध करने का प्रयास किया। एक उदाहरण आता है कि पश्चिम में भारतीयता के प्रसिद्ध विद्वान माने जाने वाले मैक्समूलर (माना यह जाता है कि वे एक बार भी भारत नहीं आये और स्वयं को सर्वश्रेष्ठ भारतज्ञ मानते थे) को संस्कृत के एक श्लोक का अर्थ अपनी धारणा के अनुरुप करवाना था। जब तक उनका मनचाहा अर्थ नहीं बैठा वह उसका अलग अलग अर्थ करवाते रहे और अंत में अनुवादकों ने 13वीं बार जो अनुवाद किया उससे उनकी चाह अनुसार अनुवाद हो पाया और फिर उसी अनुवाद को प्रचारित किया गया। ऐसी ही एक धारणा जाति के बारे में बनाई गई। जाति का बंधन हमारे यहाँ अति कठोर बंधन माना जाता था। जाति बाहर होने की सजा व्यक्ति के लिए समाज द्वारा दी जाने वाली कठोरतम सजा मानी जाती थी इसलिए जातीय बंधन धर्मांतरण में सबसे बड़े बाधक माने जाते थे। उस काल में विभिन्न रूपों में आये ईसाई धर्म प्रचारकों ने इसलिए जाति के खिलाफ जहर उगलना शुरू किया और अंततः यह सिद्ध कर दिया कि भारत में प्राचीन काल में कोई जातियां नहीं होती थीं बल्कि ये बाद में पनपी हैं इसलिए जाति एक बुराई है। जबकि हमारे प्राचीन वांग्मय में हमें हिरण्यकश्यप के समय कुम्हार जाति का उल्लेख मिलता है, महाराजा हरिश्चंद्र के समय डोम जाति का उल्लेख मिलता है। भगवान राम के समय धोबी, मल्लाह आदि का उल्लेख मिलता है। महाभारत में नाई आदि का उल्लेख मिलता है। इन सब उल्लेखों से पता चलता है कि भारत में जाति नामक संस्था प्राचीन समय से ही अस्तित्व में रही है। अंग्रेजों के द्वारा पढाई गयी वह पट्टी आज भी हमारे देश में तथ्यपरक धारणा बनकर प्रचलित है और भारत की भारतीयता की बात करने वाले भी इसे बाद में पैदा हुई विकृति बता कर जाति विहीन समाज की बात करते हैं। ऐसे लोग भी उसी मैक्समूलर के भारतीय संस्करण मात्र ही हैं जो देश, काल और परिस्थिति के अनुरूप अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए धारणायें गढ़ कर उनकी पुष्टि के लिए तथ्यों का तोड़ मरोड़ कर पेश करते हैं। ये लोग कभी वामपंथियों के वेष में, कभी दक्षिणपंथियों के वेष में, कभी सुधारवादियों के वेष में तो कभी पुरातन पंथियों के वेष में समाज के सामने प्रकट होते हैं और अपने प्रच्छन्न उद्धेश्यों की पूर्ति के लिए इतिहास पर हमला करते हैं। इसी मुहीम के तहत हमारे पूर्वजों का चरित्र हनन करने के लिए मुगलों से वैवाहिक संबंधों की बात को बढ़ाचढ़ा कर बताया गया। हमारे पूर्वजों की राजनीतिक संधियों को गुलामी कहकर प्रचारित किया गया। कुछ बदनाम उदाहरणों के सहारे हमें आततायी, क्रूर और शोषक सिद्ध किया गया। हमें युद्धान्मादी और रक्तपिपासु बताया गया। सदैव आपस में लड़ते रहने वाले एवं राष्ट्रीय एकता में बाधक बताया गया। चोलों, पल्लवों, राष्ट्रकूटों, परमारों, प्रतिहारों आदि के काल को कुछ पन्नों में सिमटा कर उनका न्यून मूल्यांकन किया गया और इतिहास के नाम पर उत्तर मध्यकालीन मुस्लिम शासकों के शासन को ही पढ़ाया गया। यह भरपूर प्रचार किया गया कि हमारे नायक हमारे ही लोगों के असहयोग और गद्दारी के कारण हारे। धर्मपालक शासक जयचंद को तो गद्दारी का प्रतीक तक बता दिया गया। महाराणा सांगा की महानता पर भी प्रश्न उठाया गया और उन्हें बाबर को बुलाने वाला तक बता दिया गया। यही नहीं मौर्यों को शुद्र बताया गया, गुप्तों को वैश्य बताया गया और अब प्रतिहारों, परमारों, चालुक्यों, चौहानों, तौमरों आदि को गुर्जर आदि बताया जा रहा है। सुहेलदेव बैंस को पासी बताया गया और रामदेव जी को भी मेघवाल बताया गया। मैक्समूलर की तर्ज पर झूठ को सत्ता, प्रचार और पैसे के बल पर सत्य सिद्ध करने का प्रयास करने वाले ये लोग चाहे वामपंथियों के वेष में आयें चाहें दक्षिणपंथियों के रूप में, चाहें प्रगतिवादियों के रूप में आयें चाहें पुरातन पंथियों के रूप में, चाहें राष्ट्रवादियों के रूप में आयें चाहें अन्य किसी रूप में, चाहें भाजपाई बनकर आयें चाहें कांग्रेसी बनकर हमें सदैव इनसे सावधान रहना पड़ेगा। हम सावधान तब ही रह पायेंगे जब हम अपने आपको जानने का ईमानदार प्रयास कर पायेंगे। हमारे पूर्वजों को जानेंगे, हमारे इतिहास को जानेंगे, हमारे मूल दर्शन को जानेंगे, भारत के मूल को जानेंगे और तदनुसार अपने आपको गढ़ने में प्रवृत्त होंगे। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसा ही प्रयास है जो अपनी तरफ से कोई नयी परिभाषा नहीं गढ़ता, अपनी तरफ से कुछ नया नहीं कर रहा बल्कि उसे ही खोज रहा है जो भारत का अपना है, हमारा अपना है, भारत का मूल है, हमारा मूल है, भारत के सुदीर्घ अस्तित्व का कारण है, हमारे अस्तित्व का कारण है और जो खोजा है उसे जीने का प्रयत्न कर रहा है, उसे हमारे जीवन में प्रकट करने का अभ्यास करवा रहा है। यदि हम अपने आपको जानना चाहते हैं, भारत को जानना चाहते हैं, जो सनातन कहा जाता है उसे जानना चाहते हैं और उसे जानकर जीना चाहते हैं तो श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे स्वागत को सदैव उत्साहित रहता है।

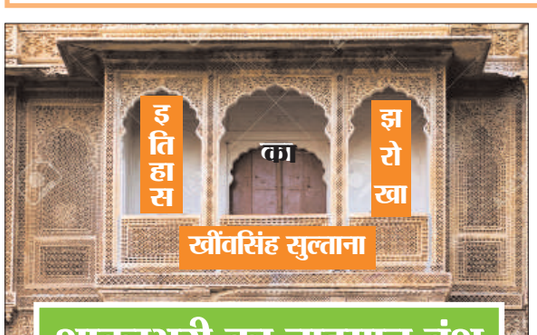

शाकम्भरी का चाहमान वंश

विग्रहराज द्वितीय के बाद उसका छोटा भाई दुलर्भराज द्वितीय शासक बना, उसने हरियाणा के कुछ भाग को अपने साम्राज्य में मिलाया जो पहले तोमरों के राज्य क्षेत्र में था। दुर्लभराव द्वितीय आनन्दपाल के नेतृत्व में महमुद गजनवी के विरुद्ध बने संघ में शामिल था। उसके बाद उसका पुत्र गोविन्दराज द्वितीय शासक बना। प्रबन्धकोश और फिरिश्ता के विवरण से पता चलता है कि उसका महमुद गजनवी से संघर्ष हुआ जिसमें महमुद गजनवी को पराजय का सामना करना पड़ा। अभिलेखों में उन्हें 'वैरिघरटूट' अर्थात शत्रुओं को नष्ट करने वाला कहा गया है। गोविन्दराज द्वितीय के बाद उसका पुत्र वाक्पतिराज द्वितीय शासक बना जिसने आघाट (उदयपुर के नजदीक वर्तमान आहाड़) के गुहिल शासक अम्बा को परास्त किया। उसके बाद उसका उत्तराधिकारी वीर्यासम हुआ जो अत्यन्त निर्बल शासक सिद्ध हुआ जिसे भोज परमार ने युद्ध में परास्त कर मार डाला और कुछ समय के लिए शाकम्बरी पर परमारों का आधिपत्य हो गया। वाक्पतिराज के दूसरे पुत्र चामुण्डराज ने पुनः सैन्य संगठन कर परमारों को परास्त कर पुनः अपनी राजधानी शाकम्भरी पर अधिकार कर लिया। चामुण्डराज के समय उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर तुर्कों के आक्रमण हुए। 'प्रबन्ध महाकोश' व 'हम्मीर महाकाव्य' से पता चलता है कि चामुण्डराज ने तुर्क सेनानायक हेजीमुद्दीन को परास्त किया और युद्ध में उसे मार डाला जो गजनी साम्राज्य के पंजाब प्रांत का प्रशासक था। चामुण्डराज के बाद उसका पुत्र दुलर्भराज तृतीय राजा बना। 'प्रबन्धकोश' के अनुसार उसका तत्कालीन गुजरात के चालुक्य नरेश कर्ण से युद्ध हुआ जिसमें चालुक्य नरेश को पराजय का सामना करना पड़ा। 'पृथ्वीराज विजय' के अनुसार वह मुस्लिम शासक सुल्तान इब्राहिम के साथ हुए युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। दुलर्भराज तृतीय के बाद उसका भाई विग्रहराज तृतीय शासक बना। विग्रहराज तृतीय ने पड़ौसी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए। उसने मालवा के शासक उदयादित्य को चालुक्य शासक कर्ण के साथ हुए संघर्ष में सैन्य सहायता प्रदान की। परमार वंश की राजकुमारी राजदेवी से विग्रहराज तृतीय का विवाह हुआ। शासन काल के अंतिम वर्षों में उसे अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा। विग्रहराज तृतीय के बाद उसका पुत्र पृथ्वीराज प्रथम शाकम्भरी का शासक बना। पृथ्वीराज प्रथम एक शक्तिशाली शासक था जिसने 'परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' की उपाधि धारण की। 'पृथ्वीराज विजय' के अनुसार उसने पुष्कर राज पर चालुक्यों द्वारा किए गए आक्रमण को विफल किया, पराजित चालुक्यों को काफी क्षति उठानी पड़ी। संभवतः उस समय चालुक्य शासक सिद्धराज जयसिंह थे। जैन ग्रन्थों के अनुसार पृथ्वीराज प्रथम का रणथम्भौर पर आधिपत्य था। जहां उन्होंने जैन मंदिरों को प्रभुतदान दिया। राजशेखर कृत प्रबन्ध कोश में पृथ्वीराज प्रथम को तुर्क सेना का संहारक बताया गया है। तुर्क सेनानायक बगुलीशाह ने पृथ्वीराज के समय आक्रमण किया जिसे पृथ्वीराज प्रथम ने बुरी तरह परास्त किया। पृथ्वीराज प्रथम एक शक्तिशाली, धर्म सहिष्णु प्रजापालक शासक थे। (क्रमशः)

विजयादशमी पर शस्त्र और शास्त्र पूजन का आयोजन

15 अक्टूबर को विजयादशमी के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं द्वारा शस्त्र और शास्त्र पूजन की परंपरा का निर्वहन किया गया। जयपुर में संघशक्ति में शस्त्र व शास्त्र पूजन का कार्यक्रम हुआ। राजपूत सभा भवन, जयपुर में भी विजयादशमी मनाई गई। उत्तर प्रदेश में कानपुर जिले के धरमंगतपुर में शस्त्र और शास्त्र पूजन का कार्यक्रम हुआ जिसमें संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर व प्रांत प्रमुख जितेंद्र सिंह सिसरवादा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बीकानेर में वीर दुर्गादास नगर स्थित नारायण निकेतन में विजयादशमी का पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमें स्वयंसेवक और समाज बंधु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक भंवर सिंह उदट ने कहा कि संघ हमें शास्त्र सम्मत जीवन जीना सिखाता है। संघ के बताए मार्ग पर चलकर ही हम अपने जीवन को परिष्कृत कर सकते हैं। कार्यक्रम के पश्चात कार्यालय परिसर में संचालित श्री नारायण लाइब्रेरी का उद्घाटन भंवर सिंह उदट, नरेंद्र सिंह भवाद व प्रो. बजरंग सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन दयाल सिंह किशोरपुरा ने किया। संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गुजरात में भी विभिन्न स्थानों पर विजयादशमी का पर्व मनाया गया। गोहिलवाड़ संभाग में भावनगर प्रांत की भक्ति नगर शाखा में विजयादशमी मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक मंगल सिंह धोलेरा व छनुभा पछेगाम सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। संभाग में सीहोर में सीहोर तालुका राजपूत समाज द्वारा शस्त्र और शास्त्र पूजन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में सीहोर राजपूत समाज के प्रमुख भगीरथ सिंह कनाड तथा श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक मंगल सिंह धोलेरा उपस्थित रहे। कार्यक्रम को राजपूत पाई एंड सोसाइटी के प्रमुख डॉ विमल सिंह गोहिल ने भी संबोधित किया। भावनगर स्टेट के युवराज जयवीरराज सिंह गोहिल भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। रेवत सिंह मालवण ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में लगभग 750 समाज बंधु उपस्थित रहे। इसी प्रकार वल्लभीपुर स्थित राजपूत बोर्डिंग में भी शस्त्र और शास्त्र पूजन का कार्यक्रम श्री क्षत्रिय युवक संघ और वल्लभीपुर तालुका राजपूत युवा समाज के तत्वाधान में मनाया गया। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक धर्मेंद्र सिंह आम्बली, वल्लभीपुर तालुका राजपूत समाज के प्रमुख वीरमदेव सिंह पछेगाम, राघवेंद्र सिंह और बोर्डिंग के गृहपति शक्ति सिंह कार्यक्रम में उपस्थित रहे। देपला गांव में भी कार्यक्रम रखा गया। धंधूका में क्षत्रिय राजपूत समाज धंधूका द्वारा शस्त्र और शास्त्र पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। धोलेरा गांव में दशहरा शोभायात्रा के साथ शस्त्र और शास्त्र पूजन का कार्यक्रम हुआ जिसका संचालन प्रवीणसिंह धोलेरा ने लिया। कार्यक्रम में लगभग 350 की संख्या में ग्रामवासी व स्वयंसेवक उपस्थित रहे। उत्तर गुजरात संभाग के मेहसाणा प्रांत में भी विभिन्न स्थानों पर दशहरा महोत्सव शस्त्र और शास्त्र पूजन द्वारा मनाया गया। जगनाथपुरा गांव में प्रांत स्तरीय कार्यक्रम आयोजित हुआ। भेंसाना में शाखा स्तरीय कार्यक्रम हुआ। प्रान्त के कांसा, दाढ़ीयाल, वसई गांवों में बालिका शाखा में भी शस्त्र और शास्त्र पूजन किया गया।

स्व. गिरीराजसिंह लोटवाड़ा के जन्मदिवस पर प्रार्थना सभा

श्री राजपूत सभा जयपुर के दिवंगत सभाध्यक्ष गिरीराजसिंह लोटवाड़ा की जयंती के अवसर पर 16 अक्टूबर को सभा भवन के जयपुर स्थित मुख्यालय में प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। प्रार्थना सभा में परमेश्वर से प्रार्थना के साथ साथ वक्ताओं ने स्व. गिरीराजसिंह जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की भूरी भूरी प्रशंसा की। प्रार्थना सभा में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पुनिया, श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक महावीर सिंह जी सरवड़ी, सांसद रामचरण बोहरा व राज्यवर्धन सिंह, कांग्रेसी नेता धर्मेंद्र सिंह राठौड़ व विक्रमसिंह मूंडरु, विधायक कालीचरण सर्राफ, भवानी निकेतन से जालमसिंह जी, गुलाबसिंह मेड़तिया सहित सामाजिक संगठनों के अनेक पदाधिकारी, विधायक व पूर्व विधायक आदि उपस्थित रहे।

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

बनासकांठा में स्नेहमिलन संपन्न

बनासकांठा प्रांत में पालनपुर तहसील के भागल गांव स्थित शिव मंदिर में 24 अक्टूबर को हीरक जयंती के निमित्त एक बैठक का आयोजन हुआ। जसवंत सिंह मेजरपुरा व किरण सिंह मेजरपुरा ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया। राम सिंह धोता सकलाणा ने हीरक जयंती वर्ष तथा उसके उपलक्ष्य में होने वाली गतिविधियों के संबंध में उपस्थित समाज बंधुओं को जानकारी प्रदान की। रणजीत सिंह भागल में भी अपने विचार रखे। उपस्थित ग्रामवासियों ने संघ के शिविरों में अपने बालक और बालिकाओं को भेजने की प्रतिबद्धता जताई।

एक छात्रावास...

योग, व्यायाम व खेल सभी बालिकाओं के लिए आवश्यक है। समय-समय पर अनुभवी चिकित्सकों को बुलाकर छात्राओं के स्वास्थ्य संबंधी जांच भी होती है। विद्यालय के शिक्षण के अतिरिक्त दोपहर में छात्रावास-अधीक्षक की देखरेख में सभी छात्राएं हॉल में बैठकर अपने अपने विषय की तैयारी करती है। सायंकालीन खेल व संस्कार बौद्धिक भी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा है। रविवार के दिन बालिकाओं को राइफल के माध्यम से निशानेबाजी का अभ्यास भी करवाया जाता है। दूरभाष के माध्यम से छात्राओं को अपने परिजनों से बात करवाने के अलवा इनकी स्वच्छता जांच भी होती है। माह में एक दिन मनोरंजनत्मक लघु नाटिकाएं प्रस्तुति का कार्यक्रम भी होता है, जिसे विनोद सभा का नाम दिया गया है। शिक्षा के साथ दीक्षा का ऐसा समावेश है कि एक पारिवारिक भाव से इनका संवर्धन हो रहा है। इनके अलावा राजस्थान के दूरदराज के जिलों जैसे-जैसलमेर, बाड़मेर, करौली, जोधपुर, नागौर व बीकानेर जिलों की बालिकाएं इस शिक्षण संस्थान में रहकर अपना जीवन संवार रही है। पूर्ण सुरक्षा व विश्वास तथा निष्ठा का नाम ही 'दुर्गा महिला विकास संस्थान' है।

शाखा अमृत

17 अक्टूबर को साप्ताहिक रविवारीय शाखा में डायरी के अवतरण संख्या 329 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि इस अवतरण में कच्चे लोहे और फौलाद की उपमा देते हुए साधना के स्तरों को बताया गया है। साधना की प्रारंभिक स्थिति में साधक को कच्चे लोहे की भांति होना चाहिए जिसे सरलता से मनचाही आकृति में ढाला जा सके। यदि स्वयंसेवक में लचीलापन नहीं हो तो वह संघ की साधना को आत्मसात नहीं कर पाता और न ही उसके अनुसार स्वयं को ढाल पाता है। लेकिन साथ ही साथ साधक ने जो सीखा है उसे अपने में स्थायी करने के लिए उसे फौलाद की भांति मजबूत भी होना चाहिए अन्यथा अस्थिरता उसका स्वभाव बन जाएगी। इस प्रकार साधक को कच्चे लोहे और फौलाद दोनों की विशेषता अपने भीतर विकसित करनी चाहिए। संघ द्वारा जो ज्ञान दिया जा रहा है उसे ग्रहण करने के लिए साधक को कच्चे लोहे के समान रहना चाहिए, वहीं मिले हुए ज्ञान पर विश्वास करने में उसे फौलाद की भांति दृढ़ होना चाहिए। कोमलता और कठोरता दोनों ही साधक के व्यक्तित्व के अंग होने चाहिए, लेकिन साधक का विवेक इतना परिष्कृत अवश्य होना चाहिए कि उसे किस गुण का कहां पर प्रयोग करना है, यह ठीक से पता हो अन्यथा यदि कोमलता की जगह कठोरता और कठोरता की जगह कोमलता का प्रयोग हुआ तो साधना अवरुद्ध हो जाएगी। आगे स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्होंने बताया कि साधना सदैव प्रगतिशील होती है इसलिए उसमें नए पड़ाव और नए मोड़ आते रहते हैं। साधक को निरंतर नई चीजें सीखने की आवश्यकता होती है। जिस स्तर पर साधक पहुंचा है उससे आगे बढ़ने के लिए उसे नए ज्ञान को और नई क्षमताओं को हासिल करना होता है। इसके लिए आवश्यक है कि साधक में ग्रहणशीलता सदैव बनी रहे और नए ज्ञान के प्रति वह नमनशील रहे। लेकिन यदि पिछला सीखा हुआ ज्ञान स्थायी नहीं बनता तो नए ज्ञान के लिए भी आधार नहीं बन पाता। इसलिए जो सीखा है उसे अपने भीतर स्थायी करना भी साधक के लिए आवश्यक है। संघ की साधना जीवन भर की साधना है, इसलिए एक स्तर तक पहुंच कर अपने आप को पूर्ण मानने की भूल साधक को नहीं करनी चाहिए। ऐसा साधक अपनी मान्यताओं में दृढ़ भले ही हो लेकिन वह आगे विकास की संभावनाओं को खो देता है। इसलिए साधक को चाहिए कि वह अपने आप को नए ज्ञान के प्रति जिज्ञासु बनाए रखे और जो ज्ञान व अनुभव उसने प्राप्त किए हैं उनको अपने आचरण का अंग बना कर स्थायी स्वरूप प्रदान करे। 15 अक्टूबर को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'राही जब से आया' पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह जी धोलेरा ने बताया कि वह व्यक्ति भाग्यवान है जिसे अपने उद्देश्य के अनुकूल प्रवृति एवं आवश्यक साधन उपलब्ध हो जाते हैं। गीता में श्री कृष्ण ने कार्य सिद्धि की पाँच आवश्यक बातें बताई हैं। पहली- जो कार्य को करने हेतु आवश्यक आधार या क्षेत्र उपलब्ध हो। दूसरी- कार्य को करने वाला जानकार हो। तीसरी - उपयुक्त एवं आवश्यक साधन उपलब्ध हों। चौथी - विविध प्रकार के क्रिया- कलाप और पाँचवी - भाग्य का साथ हो। इन्हीं को संघ के सन्दर्भ में समझाते हुए उन्होंने कहा कि संघ को समाज रूपी क्षेत्र उपलब्ध है। पूज्य श्री जैसे ज्ञानी के निर्देशन में यह स्थापित हुआ। संस्कारित एवं ध्येयनिष्ठ स्वयंसेवक इसके साधन हैं तो शिविर, शाखाएं आदि विविध क्रिया-कलाप। प्रारब्ध रूप में पूज्य श्री तनसिंह जी की तपस्या और ईश्वर की अहेतुकी कृपा संघ के साथ है। इस सहगीत में संघ का स्वयंसेवक अपने को संघ रूपी साधना मार्ग का राही बताते हुए कहता है कि इस पथ पर चलने से मेरा जीवन तेजस्वी बन गया है। संघ कार्य में मैंने अमूल्य निधियाँ प्राप्त की हैं। संघ के न्यूनतम आवश्यकता वाले जीवन में आनन्द और पवित्रता के साथ निरन्तर ईश्वर की ओर बढ़ने का अनुभव करता हूँ। ऐसे मार्ग को पाकर स्वयंसेवक अपने को धन्यभागी समझता है और कहता है कि संघ में आने से पूर्व कई कुण्ठाएं एवं पूर्वाग्रह थे जो संघदर्शन को आत्मसात करने के बाद दूर हो गए। ऐसे मार्ग को पाकर अन्य कोई चाह शेष नहीं रहती। स्वयंसेवक अगले जन्म में भी इसी स्वर्ग रूपी संघधाम में आने की ईश्वर से प्रार्थना करता है। 21 अक्टूबर को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'मेरा मस्तक झुक झुक जाये' का अर्थबोध करते हुए उन्होंने बताया कि इस सहगीत में पूज्य तनसिंह जी ने परम पूज्य केशरिया ध्वज की प्रार्थना एवं वन्दना की है। जिसे हम पूजनीय मानते हैं उससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। ध्वज कोई कपड़े का टुकड़ा मात्र नहीं बल्कि यह हमारी गौरवमयी संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास का साक्षी है जिसे हम प्रतीकात्मक रूप में पूजनीय, वन्दनीय मानते हैं। इसी केशरिया ध्वज ने श्रीराम से लेकर अभी तक की गौरवमयी क्षात्र परम्परा को देखा है। अतः संघ भी इसी ध्वज को अपना आराध्य एवं नेता मानता है। इसी ध्वज की प्रेरणा से संघ रूपी त्यागमयी ज्वाला निरन्तर जलती रहे, ऐसी पूज्य श्री प्रार्थना करते हैं। वे इस गीत में आगे कहते हैं कि संघ में भी स्वयंसेवक समाज की रक्षा हेतु छत्र छँवर धारण किए सिपाही की तरह कर्मशील है। समाज को पीड़ा से मुक्त करने हेतु निरन्तर कर्मरत है। त्यागमय जीवन जीने का यह संकल्प युग-युग का है तभी तो हमारा इतिहास अभी तक कोई मिटा नहीं पाया है। ऐसे दिव्य प्रतीक केशरिया ध्वज को सर्वस्व अर्पित कर हम रक्तिम तिलक लगाएं। इस समाज जागरण के महाअभियान में मेरा तन, मन एवं यह अल्प जीवन केशरिया ध्वज को अर्चन रूप में समर्पित है। आने वाली पीढ़ीयाँ भी ध्वज से इसी तरह प्रेरणा लेकर इसी त्यागमयी मार्ग पर चलें एवं इसके सामने अपना शीश नवाएं।

(पृष्ठ तीन का शेष)

नवी शताब्दी...

सम्राट मिहिरभोज ने भी उसी साध्य को अपनाया और अपने स्वधर्म का पालन करते हुए इतिहास में अमर हो गए। आज उसी इतिहास को षडयंत्र पूर्वक विकृत करने का प्रयास किया जा रहा है। उसे रोकना आवश्यक है और उसके लिए प्रयास भी किए जाने चाहिए लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि इतिहास केवल गौरव करने के लिए ही नहीं होता। श्री क्षत्रिय युवक संघ इतिहास को केवल गौरव की वस्तु ना मानकर उसे श्रेष्ठतम शिक्षक मानता है। संघ मानता है कि इतिहास हमारी प्रेरणा के लिए है, हमारे सीखने के लिए है। यदि इतिहास को जानकर हम उसे दोहराने के लिए प्रयत्न नहीं करते तो वह इतिहास व्यर्थ हो जाता है। संघ मिहिरभोज जैसे हमारे पूर्वजों को केवल स्मरण ही नहीं करना चाहता, जयन्ती मनाकर उनके प्रति केवल श्रद्धा ही नहीं प्रकट करना चाहता बल्कि समाज में नए मिहिरभोज बनाना चाहता है क्योंकि इसी में उनकी जयन्ती मनाने की सच्ची सार्थकता है। रानीवाड़ा विधायक नारायण सिंह देवल ने मिहिरभोज जैसे महापुरुषों से प्रेरणा लेकर आगे चलने की बात कही और कहा कि जो सबकी रक्षा करे, सबको साथ लेकर चले और सबको विकास की ओर बढ़ाये वही सच्चा क्षत्रिय है। भीनमाल विधायक पूराराम चौधरी ने क्षत्रिय समाज को सभी के लिए आदर्श बताते हुए क्षत्रिय शासक मिहिर भोज और भीनमाल के सम्बन्ध पर प्रकाश डाला। पूर्व जिला प्रमुख बन्नेसिंह गोहिल ने श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने के प्रयास को सराहते हुए इतिहास से प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि जिनका इतिहास नहीं रहता, उनका सब कुछ समाप्त हो जाता है। कार्यक्रम में अशोकसिंह ओपावत (राव) ने भीनमाल के इतिहास की जानकारी दी व प्रकाश सिंह राव ने प्रतिहार वंश की क्रमवार पीढियां बताई। प्रांतप्रमुख नाहरसिंह जाखड़ी ने कार्यक्रम का परिचय प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में जालौर जिला प्रमुख राजेश राणा, रानीवाड़ा प्रधान राघवेंद्रसिंह, चितलवाना प्रधान प्रतिनिधि हिंदूसिंह दुठवा, सहित सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे। संभागप्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 18 अक्टूबर को जोधपुर संभाग में शेरगढ़ प्रान्त के बेलवा गांव में बींजा बाबा के स्थान के पास गाजणमाता पहाड़ी की तलहटी में सम्राट मिहिरभोज जी की जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई। यहां भी संघ के प्रतिनिधि ने उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि क्षत्रिय ने सदैव राष्ट्र, समाज व धर्म की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया है। पीढ़ियां खपाकर भी इस राष्ट्र को और इसकी संस्कृति को हमने बचाए रखा लेकिन आज निहित स्वार्थों द्वारा षडयंत्र पूर्वक क्षत्रियों के इतिहास को मिटाने, विकृत करने का प्रयास किया जा रहा है। इस षड्यंत्र को विफल करने के लिए आवश्यक है कि हम अपने पूर्वजों को स्मरण करना प्रारंभ करें। हमारे ऐसे महान पूर्वजों की जयंती मनाने से हमारी आने वाली पीढ़ी को भी प्रेरणा मिलेगी। पूर्व सांसद नारायण सिंह माणकलाव ने कहा कि नई पीढ़ी को हमारे पूर्वजों के गौरवशाली पथ पर आगे बढ़ाने का एक मात्र उपाय श्री क्षत्रिय युवक संघ है। हम संघ का जितना सहयोग कर पायेंगे उतना ही पूरी कौम को उस गौरव की ओर अग्रसर कर पायेंगे। रानीवाड़ा विधायक नारायण सिंह देवल, शेरगढ़ विधायक मीना कंवर व पूर्व विधायक बाबूसिंह राठौड़, प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य उम्मेदसिंह चौरड़िया, चन्द्रवीर सिंह भालु आदि ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा तथा संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। भैंरू सिंह बेलवा व नरपत सिंह बस्तवा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

भीनमाल

राजनौता (कोटपूतली) में बैठक

जयपुर जिले की कोटपूतली तहसील के राजनौता गांव में 17 अक्टूबर को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की तहसील स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के प्रारंभ में श्री क्षत्रिय युवक संघ व श्री प्रताप फाउंडेशन का सामान्य परिचय दिया गया एवं श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की स्थापना की पृष्ठभूमि बताई गई।

तत्पश्चात यशवर्धन सिंह झेरली ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य एवं उसकी कार्ययोजना के 6 बिंदुओं की विस्तार से जानकारी दी। इसके उपरांत हुई अनौपचारिक चर्चा में संभागीयों ने अपने विचार व्यक्त किए एवं संघ व उसके अनुषांगिक संगठनों बाबत जानकारी हासिल की।

(पृष्ठ एक का शेष)

(आकोड़ा, बाड़मेर में आयोजित श्रद्धेय आयुवान सिंह जयन्ती कार्यक्रम में माननीय संरक्षक श्री द्वारा प्रदत्त उद्बोधन का संपादित अंश)

आयुवान सिंह जी ने नागौर जिले के हुडील गांव में 17 अक्टूबर 1920 को ठाकुर पेहप सिंह जी के घर पर जन्म लिया। किन विकट परिस्थितियों में उन्होंने विद्याध्ययन किया, इसका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। महापुरुषों को ऐसे ही तप करके निकलना पड़ता है। ताप, ताड़न, छेदन, घर्षण से जो निकल कर के बाहर आता है वह सोना कहलाता है। ऐसा ही एक स्वर्ण का हार श्री क्षत्रिय युवक संघ को और समाज को आयुवान सिंह जी के रूप में मिला। यद्यपि उन्होंने बहुत उम्र नहीं पाई। उनका परिचय तन सिंह जी से 1942 में पत्र व्यवहार के माध्यम से हो गया था। जब चौपासनी स्कूल में तन सिंह जी पढ़ते थे तो एक हस्तलिखित पत्रिका में उनका लेख पढ़कर के आयुवान सिंह जी बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने अंग्रेजी में वापस एक पत्र लिखा जिसमें तन सिंह जी को हीरो कहा। हीरो का मतलब जननायक और हीरा का मतलब स्वर्ण। वहां इन दोनों का मिलन हुआ यद्यपि अभी तक एक दूसरे को देखा नहीं था। सन 1944 में जोधपुर में एक सभा में पूज्य तन सिंह जी ने आयुवान सिंह जी का नाम उस सभा के अध्यक्ष के लिए रखा और स्वयं ने संचालन किया। 1947 में वह बाड़मेर के बोर्डिंग हाउस में डिप्टी सुपरिंटेंडेंट थे। पीटीआई रहे, इसलिए माड़साब के नाम से फेमस है। हल्की सी मुस्कान के साथ हर एक व्यक्ति से बात करना उनका स्वभाव था और लोगों को प्रभावित करने का यही उनका एकमात्र तरीका था। 1946 में जब विधिवत श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना जयपुर में हुई तो तन सिंह जी अध्यक्ष बने और पहला शिविर भी जयपुर में ही लगा। बाद में नागौर जिले में कुचामन के पास भैरों तालाब पर शिविर लगा उसमें आयुवान सिंह जी ने संघ के प्रति अपने आप को समर्पित किया और उनकी सांघिक यात्रा प्रारंभ हुई। 1949 में तनसिंह जी संघ के संघप्रमुख बने। 5 साल मिलकर दोनों ने काम किया और तन सिंह जी ने जब देखा कि आयुवान सिंह जी विद्वान है, उनका हिंदी, अंग्रेजी, मारवाड़ी आदि भाषाओं पर वर्चस्व है, लोगों को अपना बनाने में लोक संग्रह के लिए जो गुण आवश्यक हैं उनमें माहिर हैं तो तन सिंह जी ने उन्हें 1954 में संघ प्रमुख बनवाया। 54 से लेकर 59 तक वे संघ के संघ प्रमुख रहे। उस समय जो भूस्वामी आंदोलन हुआ था वह अभियान श्रद्धेय आयुवान सिंह जी का था। पूरे समाज में और पूरे राजस्थान के राजपूतों में एक जागरण आया और कुछ लोग तो यह उम्मीद कर बैठे कि हमारा राज वापस आने वाला है। वह कभी नहीं आना था और नहीं आया लेकिन उनके ओजस्वी भाषणों से, उनके उत्कट विचारों से लोगों को समाज का उत्कर्ष दिखाई देता था जिससे उस समय के शिविरों में अधिक भीड़ आती थी। भूस्वामी आंदोलन के कारण उनको पूरे राजस्थान में जानने वालों की संख्या बहुत बढ़ गई। वे 1954 से 59 तक संघप्रमुख रहे। जैसलमेर में 1959 के दशहरे के दिनों में शिविर लगा जिसमें नया संविधान बनाया गया। उसमें तन सिंह जी, आयुवान सिंह सहित पुराने अनेक लोग थे। कालांतर में आयुवानसिंह जी राजनीति में अधिक सक्रिय हुए और शेखावाटी में मनसा माता शिविर में तनसिंह जी ने पुनः कार्यभार संभाला तब से 1969 तक वे संघप्रमुख रहे। नारायण सिंह जी जो हनुमान की तरह से तन सिंह जी के साथ रहते थे उन्हें 1969 में बोरुंदा ओटीसी में तन सिंह जी ने संघ प्रमुख बनाया। नारायण सिंह जी तन सिंह जी के रहते संघप्रमुख के स्थान पर कभी खड़े भी नहीं हुए। वह अपने आपको उनका सेवक ही समझते थे। तन सिंह जी के 1979 में देहांत के 10 वर्ष पश्चात तक नारायण सिंह जी स्वतंत्र रूप से संघप्रमुख का दायित्व निभाते रहे। यह जो माटी का पुतला है, मनुष्य है, स्त्री या पुरुष है भगवान ने हम को जिस रूप में यहां भेजा है, अपना काम करके या ना करके सभी यहां से चले जाते हैं। सबसे पहले संघप्रमुख में आयुवान सिंह जी 7 जनवरी 1967 को चले गए लेकिन संघ चलता रहा। फिर 7 दिसंबर 1979 को तन सिंह जी गए और संघ चलता रहा, नारायण सिंह जी भी अक्टूबर 1989 में चले गए और संघ चल रहा है। द्रुत गति से चल रहा है। इन महापुरुषों के त्याग, तपस्या और तेजस्विता के कारण ही संघ आज भी चल रहा है और गति इतनी बढ़ गई है कि संभालना मुश्किल हो गया है। पहले केवल राजस्थान में विस्तार था फिर श्री क्षत्रिय युवक संघ गुजरात में भी फैला, महाराष्ट्र में भी गया, चेन्नई भी पहुंचा और अब इंग्लैंड, सऊदी अरब और यूएई में भी शाखा चल रही है। अभी सुना कि जापान में भी शाखा चल रही है। जो गांव तक सीमित था वह आज राष्ट्र तक ही सीमित न रहकर पूरे संसार में फैल रहा है यह उनकी त्याग-तपस्या के कारण ही। उन्होंने संघप्रमुख रहते हुए कहीं भी कंजूसी बरती होती तो वह खामी रह जाती। लेकिन उन महापुरुषों में से किसी ने भी इसके जंग नहीं लगने दी। उसी श्री क्षत्रिय युवक संघ को चलते हुए 22 दिसंबर 2021 को 75 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं, इसलिए हीरक जयंती वर्ष मनाया जा रहा है। यह हमारा अमृत महोत्सव है जिसके तहत इस वर्ष में 75 बड़े कार्यक्रम रखे जा रहे हैं। उसी की एक कड़ी एक महत्वपूर्ण घटना के हम साक्षी बन रहे हैं। प्रारंभ का श्री क्षत्रिय युवक संघ कर्म प्रधान था, कर्मठ लोगों का था। बड़ी मेहनत की सभी लोगों ने। वही नींव है इस श्री क्षत्रिय युवक संघ की। चाहे वे मिट गए लेकिन संघ और समाज को बना गए और अब मुझे कंगूरे उभरते हुए दिखाई पड़ रहे हैं। यह श्रेय किसको मिलेगा? देने को किसी कार्यकर्ता को हम दे सकते हैं लेकिन वास्तव में श्रेय आप सब के सहयोग को जाना चाहिए। प्रारंभ में बालिकाओं के शिविर नहीं लगते थे पर 1994 से लगातार बालिकाओं के शिविर लग रहे हैं। दंपत्ति शिविर भी लग रहे हैं। 50 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के लिए अलग शिविर लगते हैं। आप जिस शिविर में आना चाहें, आ सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ कल्याण का मार्ग है यह इन शिविरों में आने पर ही पता चल सकेगा। हम सब लोगों के ऊपर भगवान की कृपा है कि उसने हमको श्री क्षत्रिय युवक संघ में भेज दिया या खींच कर ले आये। हमारी अनुभूति यही कहती हैं कि श्री क्षत्रिय युवक संघ में हम नहीं आते तो पता नहीं हमारा क्या होता। जो भी तन-मन से इस काम को करेगा चाहे स्त्री हो, बालिका हो, बालक हो, पुरुष हो, जो मन लगाकर काम करेंगे उनको भगवान की भक्ति दिखाई देगी। तन सिंह जी ने कहा ईश्वर सबके हृदय में विराजमान हैं लेकिन उसको पवित्र स्थान चाहिए। हृदय पवित्र ही रहता है लेकिन बाहरी वातावरण के प्रभाव से हमारा तन मन खराब हो जाता है। तन सिंह जी ने कहा है कि ईश्वर मिलता है सद्कर्म से। गीता के अनुसार स्वधर्म का पालन ही सद्कर्म है। भगवान ने हमको जो जिम्मेदारियां दी हैं उनको पूरी किए बिना हम चले जाते हैं तो हमारा जीवन व्यर्थ चला जाता है। सुखी जीवन का उपाय है सादा जीवन, सरल जीवन। किसी के प्रतिस्पर्धी ना बनें क्योंकि अपने-अपने प्रारब्ध के अनुसार सभी को सब कुछ मिलता है। उसी में हम संतोष करना सीख लें तो हम संसार में कहीं दुखी नहीं होंगे। वह संतोष हमारे पास नहीं है इसीलिए सभी दुखी हैं इसीलिए शास्त्रों में संसार को दुखालय कहा है। लेकिन भगवान ने हमको भेजा है तो उन्होंने हमें साथ में बुद्धि और विवेक भी दिया है। अच्छे और बुरे का निर्णय करने के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए यह भगवान हमें किसी ना किसी माध्यम से संकेत करते हैं। ऐसा ही कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है और यह हमारे सबसे नजदीक है। हम क्षत्रिय के घर में जन्मे हैं, हमारे पूर्वजों ने इस धरती की और संस्कृति की रक्षा के लिए जो त्याग और बलिदान किया, जो संघर्ष किया वह ईश्वर के इस संदेश को सुनकर ही किया। हम भी संघ के माध्यम से ईश्वर के उस संदेश को सुनकर अपने स्वधर्म का पालन करें। **जय संघ शक्ति।**

पाली

सूरत

श्रद्धापूर्वक... श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा राजनौता (कोटपूतली, जयपुर) में केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा की उपस्थिति में जयन्ती मनाई गई। फाउंडेशन की नागौर टीम द्वारा वीरवर दुगार्दास सभा भवन डीडवाना में जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जैसलमेर स्थित तनाश्रम कार्यालय में भी जयन्ती मनाई गई। तनाश्रम में आयोजित कार्यक्रम में संभागप्रमुख तारेन्द्र सिंह झिनझिनयाली ने आयुवनसिंह जी का परिचय प्रस्तुत किया। इस दौरान नारायण पुस्तकालय व छात्रावास के छात्र व कार्यालय शाखा के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। मोढ़ा में वरिष्ठ स्वयंसेवक सांवल सिंह मोढ़ा की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। देवीकोट स्थित रूपादे छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम में चांधन प्रान्त प्रमुख रतन सिंह बडोडागांव व वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया उपस्थित रहे। भोजराज जी की ढाणी, रामगढ़ में तथा सोनू व पूनमनगर शाखा में भी जयन्ती मनाई गई। नागौर संभाग में कुचामन सिटी स्थित आयुवान निकेतन में व शेखावाटी प्रांत में गोठड़ा (नवलगढ़) शिविर में भी जयन्ती मनाई गई। दुर्गा महिला विकास संस्थान नाथावतपुरा, सीकर के बालिका छात्रावास में भी जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। महाराष्ट्र संभाग में दक्षिण मुम्बई प्रांत की तनेराज शाखा, उत्तर मुम्बई प्रान्त की भायंदर शाखा में भी जयन्ती मनाई गई। मलाड की दुगार्दास शाखा में भी जयन्ती मनाई गई जिसमें संभागप्रमुख नीर सिंह सिंघाणा व प्रांतप्रमुख रणजीतसिंह आलासण स्वयंसेवकों के साथ उपस्थित रहे। पुणे प्रान्त की सभी शाखाओं द्वारा राजस्थान राजपूत समाज भवन में सामूहिक रूप से पूज्य श्री की जयन्ती मनाई गई। सूरत प्रान्त में पृथ्वीराज शाखा में भी जयन्ती मनाई गई। बायतु प्रान्त के चिड़िया गांव में भी जयन्ती मनाई गई जिसमें प्रांतप्रमुख मूल सिंह चांदेसरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जितेंद्र सिंह व भोम सिंह चिड़िया ने भी अपने विचार रखें। रत्नवाड़ा (डूंगरपुर) शिविर में केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली व गोयला (अजमेर) शिविर में केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ की उपस्थिति में जयन्ती मनाई गई। खारड़ा हाउस, उदयपुर में भी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। बालोतरा प्रान्त में वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में और सिवाना प्रांत में स्थानीय कल्ला रायमलोत राजपूत छात्रावास, पृथ्वीराज शाखा सिणेर, वीर दुगार्दास शाखा कुण्डल में भी जयन्ती मनाई गई। जोधपुर संभाग में भी विभिन्न स्थानों पर आयुवान सिंह जी की जयंती मनाई गई। शहर प्रांत के नादंडी मण्डल में शहीद खींव सिंह शाखा मैदान, ओम नगर कालोनी में प्रांत प्रमुख भरतपाल सिंह दासपा, तनायन कार्यालय में नखत सिंह बेदू, बासनी मण्डल के जय भवानी नगर में लक्ष्मण सिंह गुडानाल, भीतरी शहर मण्डल के सरदार राजपूत छात्रावास में गेन सिंह चांदनी, हनुवंत राजपूत छात्रावास शाखा में भगवान सिंह बेदू सहयोगियों के साथ उपस्थित रहे। ओसियां फलौदी प्रांत के बापिणी मण्डल में श्री मेहोजी शाखा बेदू में भी जयंती मनाई गई। गुजरात में अहमदाबाद ग्राम्य प्रान्त में साणंद स्थित जलाराम मंदिर में तथा बालिका शिविर वाघासण में जयन्ती मनाई गई। गांधीनगर जिले के मगोड़ी गांव में जयंती कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह हरदासकाबास सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गोहिलवाड़ संभाग के भावनगर प्रांत के भक्तिनगर में विजयादशमी व जयन्ती कार्यक्रम साथ में आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक मंगल सिंह धोलेरा तथा छनुभा पछेगाम सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

फतहसिंह भटवाड़ा को पितृशोक

संघ के राजसमंद प्रांत के प्रांतप्रमुख फतहसिंह भटवाड़ा के पिता **श्री पृथ्वीसिंह** का 29 सितंबर 2021 को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

श्री पृथ्वीसिंह

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय

नारायण सिंह जी देवड़ा देलदर

के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंडवारिया से **33 वर्ष** की राजकीय सेवा के उपरांत वरिष्ठ अध्यापक पद से सेवानिवृत्त होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु

ठा.सा. श्री ईश्वर सिंह जी देलदर (रावला बालावा कृषि फार्म)	**मनोहर सिंह पुत्र श्री लाल सिंह जी देलदर** (भादरवा कृषि फार्म)	**खेत सिंह पुत्र श्री कोजराज सिंह जी देलदर** (पिपलिया कृषि फार्म)	**जसवंत सिंह पुत्र श्री विजय सिंह जी देलदर** (उपसरपंच ग्रा.प. मंडवारिया)	**लादू सिंह पुत्र कुंवर श्री मेहताब सिंह जी देलदर** (रावला बालावा कृषि फार्म)
नारायण सिंह पुत्र श्री भीक सिंह जी देलदर (उपप्रधान प.स. सिरोही)	**दलपत सिंह पुत्र कुंवर श्री मेहताब सिंह जी देलदर** (रावला बालावा कृषि फार्म)	**पुरण सिंह पुत्र डॉ. अभय सिंह जी देलदर** (बैंक मैनेजर, जोधपुर)	**शिवेंद्र सिंह पुत्र डॉ. अभय सिंह जी देलदर** (वेटेरिनरी प्रोडक्ट कंपनी-मुम्बई)	**महिपाल सिंह पुत्र श्री डूंगर सिंह जी देलदर** (व्यवसाय, दुबई)
नरेंद्र सिंह पुत्र श्री छतर सिंह जी मिठड़ी (व्यवसाय, दुबई)	**सुरेंद्र सिंह पुत्र श्री छतर सिंह जी मिठड़ी** (व्यवसाय, दुबई)	**धीरेन प्रताप सिंह पुत्र श्री करण सिंह जी सरेचां** (आई टी मैनेजर, नोएडा)	**तनवीर सिंह पुत्र श्री जसवंत सिंह जी देलदर** (विशेष एजेंसी, सूरत)	**महावीर सिंह पुत्र श्री सवाई सिंह जी देलदर** (अध्यापक)
परबत सिंह पुत्र श्री नारायण सिंह जी देलदर (व्यवसाय, बड़ौदा)	**मान सिंह पुत्र श्री नारायण सिंह जी देलदर** (प्री मेडिकल एलन, कोटा)	**सूर्यपाल सिंह पुत्र श्री खीम सिंह जी चुरा** (विद्यार्थी)	**भवानी सिंह पुत्र श्री मिठू सिंह जी देलदर** (विद्यार्थी)	**दुष्यंत सिंह पुत्र श्री नारायण सिंह जी देलदर** (विद्यार्थी)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org